UNIVERSITY NEWS 25 NOVEMBER 2025

AMRIT VICHAR

तिब्बत में चीन के बड़े बांध भारत के लिए खतरा

कार्यालय संवाददाता, लखनऊ

अमृत विचार : तिब्बत प्रमुख नदियों का उद्गम स्थल है, जो पूरे एशिया में लगभग दो अरब लोगों को जीवन देता है। लेकिन चीन बड़े पैमाने पर बांध निर्माण कर रहा है, जिससे भारत सहित डाउनस्ट्रीम देशों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ सकता है। यह बात तिब्बत के राष्ट्रपति पेम्पा त्सेरिंग ने लखनऊ विश्वविद्यालय में आयोजित एक समारोह में कही। उन्होंने बताया कि तिब्बती लिपि भारतीय गुप्त लिपि से विकसित हुई है और नालंदा परंपरा की बौद्ध शिक्षाओं को संरक्षित करने में तिब्बत की ऐतिहासिक भूमिका रही है। उनके अनुसार, ये सांस्कृतिक परंपराएं आज भी प्राचीन भारतीय ज्ञान का महत्वपूर्ण आधार बनी हुई हैं।

तिब्बती राष्ट्रपति पेम्पा त्सेरिंग ने लंबे समय से मिले समर्थन के लिए भारत सरकार और भारतीय जनता का आभार व्यक्त किया। उन्होंने दलाई लामा और चीन के बीच हुए 17 सूत्रीय समझौते, चीनी सरकार के साथ शांतिपूर्ण संवाद, हजारों तिब्बतियों के भारत में निर्वासन, सिक्योग से निर्वासित तिब्बती प्रशासन के गठन, दलाई लामा के मार्गदर्शन में लोकतांत्रिक संस्थाओं के विकास तथा विभिन्न तिब्बती बस्तियों की स्थापना का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि चीन तेजी से तिब्बती बच्चों को बोर्डिंग स्कूलों में दाखिल कर रहा है और उनके चीनी भाषा अपनाने पर जोर दे रहा है।

राष्ट्रपति के सम्मान में तिब्बती राष्ट्रपति और लखनऊ विश्वविद्यालय के शिक्षक।

- लखिमी में आयोजित कार्यक्रम में तिब्बती राष्ट्रपति हुए शामिल
- तिब्बत की भाषा, संस्कृति, सबकुछ भारतीयता से है जुड़ी
- तिब्बती बच्चों को चीन अपनी भाषा सिखाने पर दे रहा है जोर

राजनीति विज्ञान विभाग में हुआ कार्यक्रम

- विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग ने 'तिब्बत अवेयरनेस टीके: सिक्योरिटी एंड एनवायरनमेंट' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। अध्यक्षता प्रो. अरविंद मोहन ने की। कार्यक्रम में प्रो. आचार्य बीएसएस, प्रो. संजय गुप्ता, डॉ. अनिल कुशवाहा, प्रो. कमल कुमार, प्रो. अनिरुद्ध, प्रो. राघवेंद्र प्रताप सिंह, सहायक प्रोफेसर हिरवा पीहाम, डॉ. मधुरी साहू, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. अनामिका, डॉ. लुगनाथ तथा बड़ी संख्या में विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शोध मेधा छात्रवृत्तियों की अंतिम तिथि बढ़ी

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय में सत्र 2025-26 के लिए छात्र कल्याण, कर्मयोगी और शोध मेधा छात्रवृत्तियों के आवेदन की अंतिम तिथि को बढ़ाकर 1 दिसम्बर कर दिया गया है। विश्वविद्यालय के छात्र अब अपने आवेदन पत्र ऑनलाइन व ऑफलाइन दोनों माध्यमों से निर्धारित तिथि तक जमा कर सकते हैं। आवेदन के साथ आवश्यक सहायक दस्तावेज संलग्न करना अनिवार्य होगा।

एडवांस्ड सर्टिफिकेट कोर्स ऑन मेडिएशन शुरू

अमृत विचार, लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के विधि संकाय की एडीआर, ड्राफ्टिंग व लिटरेरी सोसाइटी द्वारा एडवांस्ड सर्टिफिकेट कोर्स ऑन मेडिएशन का आरंभ 5 बजे ऑनलाइन माध्यम से आज किया जाएगा। यह विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम 25 से 30 नवंबर तक चलेगा, जिसमें छात्रों को मध्यस्था की प्रक्रिया, तकनीकों और व्यावहारिक पहलुओं पर विस्तृत जानकारी प्रदान की जाएगी। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति राजीव भारती, न्यायाधीश, उच्च न्यायालय, इलाहाबाद उपस्थिति दर्ज कराएंगे। विशिष्ट अतिथि डॉ. मोहम्मद उमर, चीफ कंसल्टेंट एवं लीड फैकल्टी, संवाद मेडिएशन सेंटर, अपने अनुभव साझा करेंगे।

DAINIK JAGRAN

लखनऊ विश्वविद्यालय का 105वां स्थापना दिवस आज

जागरण संवाददाता • लखनऊ : एक सदी से अधिक की ऐतिहासिक एवं शैक्षणिक विरासत को संजोए लखनऊ विश्वविद्यालय मंगलवार को अपने 105 वें स्थापना दिवस पर शिक्षकों, शोधकर्ताओं व विद्यार्थियों की भौगुरुता में शैक्षणिक यात्रा और उपलब्धियों का जश्न मनाएगा।

विश्व पटल पर अपनी अमिट छाप छोड़ने वाले इस विधि की नींव कैनिंग कालेज के रूप में वर्ष 1864 में रखी गई थी। अब लखि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बन चुका है। एलुमिनाई मीट और स्थापना दिवस पर शासन, न्यायपालिका, शिक्षा, कला, प्रशासन, पत्रकारिता और विज्ञान के क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल कर विश्वविद्यालय का मान बढ़ा रहे वे विशिष्ट पूर्व छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया जाएगा। एलुमिनाई फाउंडेशन के महासचिव प्रो. सुधीर मेहरोत्रा भरतनाट्यम, कथक, शिव-ताडव, बिहु, राजस्थानी नृत्य के साथ-साथ बीटलेज, पोलैंड, केन्या और ट्यूनीशिया के विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करेंगे।

सम्मान पत्र प्रस्तुत करेंगे। मुख्य अतिथि के रूप में गृहों के वित्त मंत्री एवं पूर्व छात्र सुरेश खन्ना रहेंगे।

- मालवीय सभागार में होगा भव्य आयोजन, नौ पूर्व विशिष्ट विद्यार्थियों का होगा सम्मान
- सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी होगी प्रस्तुति

होंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी, जो सांस्कृतिकी की निशीथाग्रा अंचल बीकानेर के नेतृत्व में आयोजित होंगे। इसमें भारतीय और अंतरराष्ट्रीय छात्र भाग लेंगे। प्रस्तुतियों में

पूर्व विद्यार्थियों में इन्हें किया जाएगा सम्मानित

- सुरेश खन्ना : वित्त मंत्री उत्तर प्रदेश
- प्रो. सूर्य प्रसाद दीक्षित : प्रमुख सलाहकार एवं मुख्य विभागाध्यक्ष
- प्रो. गिरिधर मंडल सम्बल : पूर्व प्रो कुलपति, विभागाध्यक्ष बायो केमिस्ट्री
- डा. अनिल रस्तोगी : प्रख्यात संगीतकार एवं अभिनेता
- जस्टिस मनीष कुमार : इलाहाबाद उच्च न्यायालय
- सभी सिंह : पुलिस कमिश्नर, नोएडा
- प्रदीप सेठ : पूर्व रहस्य, रेस्ट्रल बोर्ड आफ डायरेक्ट टैक्सेज
- प्रभु नारायण श्रीवास्तव : धार्मिक प्रशासकार्य
- अखिलेश सिंह : वरिष्ठ पत्रकार।

विश्वविद्यालय की यात्रा

- एक मई 1864 : हुसैनाबाद कोठी में कैनिंग कालेज की अनौपचारिक शुरुआत
- वर्ष 1866 : डिग्री कक्षाओं में सिक्ष आठ विद्यार्थी थे।
- वर्ष 1870 : विधि की पढ़ाई की शुरुआत
- 24 जनवरी 1888 : कैनिंग कालेज का हुआ एमेलिएशन
- 25 नवंबर 1920 : लखनऊ विश्वविद्यालय की स्थापना हुई
- जुलाई- 1921 : पहले शैक्षिक सत्र की शुरुआत
- जुलाई 2022 : नैक द्वारा एक्स ग्रेड की उपलब्धि
- 2025 सत्र : एनआइआरएफ रैंकिंग में राज्य विश्वविद्यालयों में 23वीं, राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में 99वीं रैंक।

तीसरे परिसर की स्थापना, पैरामेडिकल साइंस में प्रशिक्षण कार्यक्रम

लखनऊ विश्वविद्यालय केवल ज्ञान देने का केंद्र नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण की व्यापक प्रयोगशाला का रूप ले, जहां हर विचार, हर प्रयोग और हर संवाद एक समृद्ध और सशक्त भारत की नींव को मजबूत करता है। विवि के भविष्य की योजनाओं में तीसरे परिसर की स्थापना, पैरामेडिकल साइंस में प्रशिक्षण कार्यक्रमों की शुरुआत, उद्योग-शिक्षक पाठ्यक्रमों की स्थापना तथा कोमल विज्ञान पाठ्यक्रमों को और अधिक सुदृढ़ करना शामिल है। इन पहलों के माध्यम से विश्वविद्यालय न केवल पेशेशिक उत्कृष्टता की नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प कर रहा है, बल्कि समाज और उद्योग की बदलती आवश्यकताओं को भी पूरा करने की दिशा में अग्रसर है।

-प्रोफेसर मनुका खन्ना, कुलपति, लखनऊ विश्वविद्यालय।

'तिब्बती संघर्ष शांतिपूर्ण समाधान पर आधारित'

- लवि के एपी सेन हाल में 'तिब्बत अवेयरनेस टाक' का आयोजन
- राष्ट्रपति पेनपा त्सेरिंग ने बताया तिब्बत का गौरवशाली इतिहास

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के एपी सेन हाल में राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से सोमवार को 'तिब्बत अवेयरनेस टाक: सिक्योरिटी एंड एनवायरनमेंट' विषय पर विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के राष्ट्रपति पेनपा त्सेरिंग रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संकाय के डीन प्रो. अरविंद मोहन ने कार्यकारी कुलपति के रूप में की।

राष्ट्रपति पेनपा त्सेरिंग ने तिब्बती इतिहास, संस्कृति और तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर एक व्यापक प्रस्तुति दी। बताया कि तिब्बती लिपि भारतीय गुप्त लिपि से विकसित हुई थी। उन्होंने भारत की प्राचीन नालंदा परंपरा की बौद्ध शिक्षाओं को संरक्षित करने में तिब्बत की दीर्घकालिक भूमिका पर जोर दिया। पेनपा त्सेरिंग ने कहा, ये सांस्कृतिक परंपराएं प्राचीन भारतीय ज्ञान के एक महत्वपूर्ण भंडार के रूप में काम करती रहती हैं। यह भी बताया कि तिब्बत प्रमुख नदियों का स्रोत है जो पूरे एशिया में लगभग दो अरब लोगों का भरण-पोषण करती है। प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं की समीक्षा करते हुए तिब्बती राष्ट्रपति ने कहा कि तिब्बत पर चीनी सरकार के कब्जे के बाद परमपावन दलाई लामा ने आपातकालीन परिस्थितियों में 17 नवंबर 1950 को आध्यात्मिक और लौकिक नेतृत्व ग्रहण किया। उन्होंने सत्रह-सूत्रीय समझौते, परमपावन दलाई लामा के चीनी सरकार के साथ शांतिपूर्वक बातचीत करने के प्रयासों, परमपावन तथा हजारों तिब्बतियों के भारत में निर्वासन में जाने की अंतिम यात्रा पर चर्चा की। कार्यक्रम के संयोजक डा. संजय शुक्ला रहे।

एपी सेन हाल में आयोजित कार्यक्रम में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के राष्ट्रपति पेनपा त्सेरिंग का कला संकाय के डीन प्रो. अरविंद मोहन ने स्वागत किया • सौ. लवि

कोआर्डिनेटर बनाया

जासं • लखनऊ : लवि इंजीनियरिंग संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर एसपी सिंह ने सात असिस्टेंट प्रोफेसरों को संकाय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल का कोआर्डिनेटर बनाया है। इनमें गौरव श्रीवास्तव, प्रशांत कुमार सिंह, पवन कुमार सिंह, नमिता श्रीवास्तव, सोनम सिंह, मारुति मौर्या और रोली कुशवाहा शामिल हैं। (जासं)

नया वैच शुरू

जासं • लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय के सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के अंतर्गत नए सेमेस्टरों में आनलाइन पढ़ाई शुरू हो गई है। इसका एकेडमिक कैलेंडर भी विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर जारी कर दिया गया है। सेंटर के निदेशक प्रोफेसर पियूष भार्गव ने यह जानकारी दी। (जासं)

NBT

मेडिकल और इंजिनियरिंग जैसे कॉलेज की नींव है लखनऊ विवि

स्थापना दिवस आज : शहर के कई बड़े संस्थानों को भी LU ने दिया जन्म

Zeeshan.Rayini@timesofindia.com

लखनऊ : लखनऊ विश्वविद्यालय ने देश को राष्ट्रपति, नेता, कुलपति जो दिए ही हैं, लेकिन इस विवि शहर में कई ऐसे संस्थानों को भी जन्म दिया है जो आज अपने अपने क्षेत्र में एक पहचान बन चुके हैं। फिर चाहे मेडिकल में किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज हो या इंजिनियरिंग का आर्टेटी कॉलेज, आर्किटेक्चर में कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर के साथ बीरबल साहनी इंस्टिट्यूट तक की देन लखनऊ विश्वविद्यालय की ही है। इसके अलावा शहर का सबसे पुराना इंटर कॉलेज राजकीय जुबिली कॉलेज भी एलयू से टूट कर ही स्थापित किया गया है। 25 नवंबर 1921 में विवि की विधिवत शुरुआत हुई। इससे पहले विवि कैनिंग कॉलेज के नाम से संचालित होता था जो पहले कोलकाता विश्वविद्यालय और उसके बाद इलाहाबाद विवि से संबद्ध था। मंगलवार को लखनऊ विश्वविद्यालय का स्थापना दिवस समारोह है। ऐसे में शहर के ऐसे ही संस्थानों की कहानी पर एक रिपोर्ट।

केजीएमयू के डॉक्टरों के पास एलयू की डिग्री केजीएमयू के डॉक्टर बहुत ही गर्व से खुद को जॉर्जियन बुलाते हैं। एक कॉलेज के रूप में 1911 में किंग जॉर्ज मेडिकल कॉलेज शुरू किया गया था। दस साल के बाद 1921 में यह लखनऊ विश्वविद्यालय के कॉलेज में रूप में जाना जाने लगा जो बाद में एलयू की मेडिकल व डैंटल फैकल्टी बना। 80 साल से अधिक समय तक केजीएमसी जो अब विवि है एलयू का ही हिस्सा रहा है। यही वजह है कि आज भी जितने पुराने डॉक्टर केजीएमयू में तैनात है लगभग सभी की डिग्री लखनऊ विश्वविद्यालय की ही है। बीसवीं शताब्दी की शुरुआत के बाद साल 2002 में यह एलयू से अलग हुआ और एक अलग विवि के रूप में स्थापित हुआ।

आर्किटेक्चर कॉलेज : 1911 में गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ आर्ट ऐंड क्राफ्ट की शुरुआत की गई जो बाद में एलयू का हिस्सा बना। एलयू के आर्किटेक्चर कॉलेज के रूप में यह कॉलेज लंबे समय तक संचालित होता रहा। आज भी एलयू का ललित कला संकाय इसी आर्किटेक्चर कॉलेज का ही एक हिस्सा है। साल 1976 में इसे गवर्नमेंट स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर बनाया गया। साल 2000 में इस कॉलेज को एलयू की फैकल्टी ऑफ आर्किटेक्चर का दर्जा दिया गया। हालांकि अगले ही साल एकेटीयू की स्थापना के बाद इसे एकेटीयू से संबद्ध कर दिया गया। इसके बाद से एलयू में यह फैकल्टी पूरी तरह खत्म हो गई।

इंस्टिट्यूट ऑफ इंजिनियरिंग ऐंड टेक्नॉलजी : आईईटी आज भी इंजिनियरिंग कॉलेज के रूप में प्रसिद्ध है। दरअसल यह एलयू का ही इंजिनियरिंग कॉलेज था। इसकी शुरुआत 1984 में इंजिनियरिंग फैकल्टी के रूप में हुई थी। यहां एलयू का बॉटेक पाठ्यक्रम चलता था। इसके बाद सरकार की ओर से इंजिनियरिंग की नई यूनिवर्सिटी यूपीटीयू शुरू की गई जो अब एकेटीयू है। ऐसे में इस कॉलेज को भी एकेटीयू से संबद्ध कर दिया गया। इसके बाद विवि में लंबे समय तक इंजिनियरिंग की पढ़ाई बंद थी। बाद में एलयू ने अपनी इंजिनियरिंग फैकल्टी शुरू की।

जुबिली कॉलेज का एलयू कनेक्शन : एलयू की शुरुआत कैनिंग कॉलेज के रूप में हुई थी जहां प्राइमरी कक्षाएं भी संचालित की जाती थी। 1884 तक सभी कक्षाएं एक साथ चलती रहीं। इसके बाद प्राइमरी कक्षाओं को अलग कर दिया गया। 1887 में बाकी कक्षाएं भी अलग कर दी गईं। इसी के बाद 1877 में जुबिली स्कूल की शुरुआत हुई जो अब राजकीय जुबिली इंटर कॉलेज है। इसके बाद हाईस्कूल तक की पढ़ाई जुबिली स्कूल में होने लगी और 11वीं 12वीं कैनिंग कॉलेज में ही होती रही। 1921 में जब एलयू विवि बना तो पहले सत्र में डिग्री के साथ 12वीं के विद्यार्थी भी थे। इसके बाद इंटर की पढ़ाई भी बंद हुई।

रिसर्च इंस्टिट्यूट भी एलयू की देन : लखनऊ विवि के पूर्व शिक्षक व बिकानेर के महाराजा गंगा सिंह विवि के कुलपति प्रो. मनोज दीक्षित ने बताया कि एलयू ने कई रिसर्च इंस्टिट्यूट को भी जन्म दिया है। बीरबल साहनी इंस्टिट्यूट के जन्मदाता बीरबल साहनी भी एलयू के बॉटनी विभाग में थे और यहीं से इंस्टिट्यूट एक यूनिट के रूप में चल रहा था। बाद में एक अलग इंस्टिट्यूट बनाया गया।

I NEXT

डिपार्टमेंट्स जो बताते हैं एलयू के स्वर्णिम सफर की कहानी

लखनऊ यूनिवर्सिटी का 105वां स्थापना दिवस आज

i SPECIAL

LUCKNOW (24 Nov, inext): लखनऊ यूनिवर्सिटी का आज 105 वां स्थापना दिवस है. एलयू की शुरुआत 1864 में कैनिंग कॉलेज के रुप में हुई, जो 1920 में लखनऊ यूनिवर्सिटी के रुप में स्थापित हुई. यूनिवर्सिटी ने देश को कई राजनेता, एजुकेशनिस्ट, वैज्ञानिक, साहित्यकार, इतिहासकार दिए. आज ऑन कैंपस लगभग 17,500 स्टूडेंट्स पढ़ाई कर रहे है. वहीं एलयू से एफिलिएटेड कॉलेजेस को मिलाकर ये संख्या करीब 4.5 लाख हो जाती है. स्थापना दिवस विशेष में पढ़िए उन डिपार्टमेंट्स की कहानी जो यूनिवर्सिटी की स्थापना के समय से आज तक चमक रहे हैं...

1 डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश एंड मॉडर्न यूरोपियन लैंग्वेजेस

डिपार्टमेंट ऑफ इंग्लिश एंड मॉडर्न यूरोपियन लैंग्वेजेस की स्थापना 1921 में हुई. यहां यूजी, पीजी और पीएचडी कोर्सेज के अलावा फॉरेन लैंग्वेजेस की भी पढ़ाई होती है. पीएचडी संग डिप्लोमा भी किया जा सकता है. प्रोफेसर डॉ. आरपी सिंह ने बताया कि वैसे तो डिपार्टमेंट से कई महान हस्तियां निकलीं लेकिन एलुमिनाईज में भी पद्मश्री राज बिसारिया और पद्मश्री चंद्रशेखर रथ का नाम उल्लेखनीय है.

डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स

2 डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स की स्थापना 1921 में ही हुई. इसके पहले प्रमुख डॉ. रामकमल मुकर्जी थे, जो बाद में वीसी भी रहे. इस डिपार्टमेंट में यूजी, पीजी और पीएचडी के साथ-साथ एक सर्टिफिकेट कोर्स भी है. इसके अलावा ने बताया कि यहां से बड़ी संख्या में एलुमिनाईज पूरे देश में नाम रोशन कर रहे हैं. जिसमें वीमेन यूनिवर्सिटी मुर्मू की प्रो वीसी रूबी ओझा और इकोनॉमिक्स डिपार्टमेंट से ही पीएचडी करके फैकल्टी के रूप में रहे और फिर फिर इंस्टीट्यूट ऑफ डेवलपमेंट स्टडीज के डायरेक्टर रहे प्रो. एके सिंह आदि का नाम उल्लेखनीय है.

डिपार्टमेंट ऑफ पॉलिटिकल साइंस

3 पॉलिटिकल साइंस डिपार्टमेंट की स्थापना 1922 में हुई थी. इस डिपार्टमेंट में यूजी, पीजी और पीएचडी तक के कोर्सेज है. भारत के कुछ प्रमुख राजनीति वैज्ञानिक, जैसे प्रो. वीरता राय, प्रो. एमपी पांडेयी, प्रो. एसी आर्यौवीकर, प्रो. राघवेंद्र सिंह, प्रो. नीरा फेरमान, प्रो. आरबी दास, प्रो. टीपी सिंह, प्रो. एसडी ठाकुर और प्रो. एसएम सर्दिद, आदि इस डिपार्टमेंट के फैकल्टी रहे हैं. इस डिपार्टमेंट ने भी देश को कई बेहतरीन निकाले दिए हैं, जिसमें से हाईकोर्ट के जज जस्टिस मनीष कुमार, एलयू की वर्तमान वीसी प्रो. मनुका खन्ना शामिल हैं.

डिपार्टमेंट ऑफ संस्कृत

4 संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग भी एलयू की स्थापना के साथ स्थापित हुआ. 1921 में ही इसकी नींव पड़ी. इस डिपार्टमेंट में यूजी, पीजी और पीएचडी कोर्सेज है. संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग के प्रोफेसर डॉ. श्यामसेना त्रिपाठी ने बताया कि वैसे तो डिपार्टमेंट से कई व्यक्ति यूनिवर्सिटी का नाम रोशन कर रहे हैं, लेकिन इनमें प्रो. ओपी पांडेय और नवजीवन रस्तोगी का नाम विशेष तौर पर उल्लेखनीय है.

AMAR UJALA

ज्ञान की गौरवशाली गाथा के 105वें अध्याय में प्रवेश करेगा लखनऊ विवि

मालवीय सभागार में होगा समारोह और एलुमनाई मीट, सांस्कृतिक विविधता की झलक देखने को मिलेगी

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। 150 वर्षों से अधिक पुराने इतिहास, शैक्षणिक उत्कृष्टता और सांस्कृतिक गरिमा की पहचान लखनऊ विश्वविद्यालय मंगलवार को अपना 105वां स्थापना दिवस मनाएगा। मालवीय सभागार में होने वाला यह भव्य आयोजन न सिर्फ विश्वविद्यालय की शैक्षणिक उपलब्धियों का उत्सव होगा, बल्कि पूर्व छात्रों, वर्तमान विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच पीढ़ियों को जोड़ने वाला ऐतिहासिक अवसर भी बनेगा।

कार्यक्रम में सांस्कृतिक विविधता की अद्भुत झलक देखने को मिलेगी। प्रो. अंचल श्रीवास्तव के निर्देशन में भारतीय व अंतरराष्ट्रीय छात्र भरतनाट्यम, कथक, बिहु, राजस्थानी नृत्य के साथ शिव-तांडव प्रस्तुत करेंगे। वहीं श्रीलंका, पोलैंड, केन्या और ट्यूनीशिया के छात्र अपनी पारंपरिक विरासत का रंग बिखेरेंगे। यह प्रस्तुति विश्वविद्यालय की बहुसांस्कृतिक पहचान एवं वैश्विक समावेशी वातावरण का सशक्त प्रत्यक्ष प्रमाण होगी। समारोह के मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार के वित्त मंत्री सुरेश खन्ना होंगे। एलुमनाई फाउंडेशन के महासचिव प्रो. सुधीर मेहरोत्रा विशिष्ट पूर्व छात्रों के लिए उद्धरण-पत्र पेश करेंगे।

स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर रंग-बिरंगी झालरों से सजाया गया लखिवि। -अमर उजाला

इस वर्ष इन आठ विभूतियों को मिलेगा सम्मान

- लक्ष्मी सिंह (आईपीएस अधिकारी)
- प्रबोध सेठ (सदस्य, सीबीडीटी)
- न्यायमूर्ति मनीष कुमार (हाईकोर्ट, प्रयागराज)
- प्रो. एस.पी. दीक्षित (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिंदी)
- प्रो. जीजी. सनवाल (पूर्व प्रो-वीसी, बायोकेमिस्ट्री)
- डॉ. अनिल रस्तोगी (प्रख्यात रंगकर्मी व अभिनेता)
- पी.एन. श्रीवास्तव (धार्मिक प्रवचनकर्ता)
- अखिलेश सिंह (वरिष्ठ पत्रकार)

छात्रवृत्ति आवेदन की तारीख एक दिसंबर तक बढ़ी

लखनऊ। लखनऊ विवि ने छात्र कल्याण, कर्मयोगी और शोध मेधा छात्रवृत्तियों के आवेदन की अंतिम तारीख बढ़ा दी गई है। छात्र अब एक दिसंबर तक अपना आवेदन जमा कर सकते हैं। सोमवार को यह जानकारी अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो. वीके शर्मा ने जारी की। विवि की ओर से बताया गया कि छात्र इन छात्रवृत्तियों के लिए ऑनलाइन या ऑफलाइन आवेदन कर सकते हैं। आवश्यक दस्तावेज संलग्न करना अनिवार्य होगा। सभी संकायाध्यक्षों और विभागाध्यक्षों को निर्देश है कि वे प्राप्त आवेदनों को समय पर अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय भेज दें। (माई सिटी रिपोर्टर)

नालंदा परंपरा का तिब्बत से रहा है आध्यात्मिक संबंध

लखनऊ। लखनऊ विश्वविद्यालय के एपी सेन हॉल में सोमवार को राजनीति विज्ञान विभाग की ओर से 'तिब्बत अवेयरनेस टॉक: सिक्योरिटी एंड एनवायरनमेंट' विषय पर विशेष व्याख्यान हुआ। मुख्य वक्ता केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के राष्ट्रपति पेनपा त्सेरिंग ने बताया कि नालंदा परंपरा से तिब्बत का आध्यात्मिक संबंध था। तिब्बती लिपि की उत्पत्ति भारत में हुई थी। उन्होंने तिब्बत की सामरिक स्थिति, पर्यावरणीय संकटों और एशियाई सुरक्षा ढांचे पर व्यापक चर्चा की। उन्होंने कला संकाय के डीन प्रो. अरविंद मोहन ने तिब्बत की ऐतिहासिक-राजनीतिक पृष्ठभूमि पर बात रखी। संस्कृति बोर्ड निदेशक प्रो. अंचल श्रीवास्तव ने तिब्बती संस्कृति संरक्षण पर विचार साझा किए। विभागाध्यक्ष प्रो. संजय गुप्ता ने तिब्बत की भूराजनीतिक चुनौतियों पर प्रकाश डाला। संयोजन डॉ. संजय शुक्ला ने किया। (माई सिटी रिपोर्टर)

HINDUSTAN

एलयू के गौरवशाली इतिहास का उत्सव आज, पूर्व छात्र सम्मानित होंगे

आयोजन

लखनऊ, संवाददाता। देश के प्रतिष्ठित और गौरवशाली इतिहास की विरासत को संजोने वाले शिक्षण संस्थानों में एक और नैक में ए प्लस ग्रेड पाने वाला लखनऊ विश्वविद्यालय अपने 105 वर्षों की शानदार यात्रा का स्थापना दिवस मनाने में प्रवेश करेगा। 150 वर्ष से भी पुराने शैक्षणिक इतिहास वाले एलयू में मंगलवार को भूमनाथ से स्थापना दिवस समारोह और एलुमनाई मीट का आयोजन किया जाएगा।

इस दौरान होने वाले सांस्कृतिक आयोजनों में भारतीय और अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी तरह-तरह की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देंगे जिसे देख खुद शिक्षकों का बचपन बचपने के लिए पूरी तैयारी कर चुके हैं। विवि के स्थापना दिवस समारोह में मुख्य अतिथि प्रदेश सरकार में वित्त मंत्री सुरेश खन्ना होंगे। खन्ना ही इस अवसर पर समारोह में कला, प्रशासन, न्यायपालिका और पत्रकारिता के क्षेत्र में सेवा दे रहे विवि के अहम पूर्व छात्रों को सम्मानित भी किया जाएगा।

105 वें स्थापना दिवस समारोह में कई सांस्कृतिक प्रस्तुतियां होंगी

आठ विद्यार्थियों से शुरुआत आज 22 हजार संख्या

1864 में कैनिंग कॉलेज की शुरुआत आठ छात्रों के साथ हुई थी। अगले दो साल यहां सिर्फ ग्रेजुएट तक की पढ़ाई होती थी। अगला कॉलेज के प्रिंसिपल टॉमस की निगरानी में यह कलकत्ता विवि से संबद्ध था। वर्ष 1887 में इलाहाबाद विवि बनने के बाद इससे संबद्ध हो गया। 13 अगस्त 1920 को इलाहाबाद विवि में तो, गवर्नर सर हरकोर्ट बटलर की अध्यक्षता में हुई वित्तीय बैठक में उन्नीस विश्वविद्यालय स्थापित करने की जानकारी दी। 1921 में पहले शैक्षिक सत्र में डिग्री के साथ 12वीं के विद्यार्थी थे। आज विद्यार्थियों की संख्या करीब 22 हजार है।

ताल्लुकेदारों ने चंदा जमा कर खोला कैनिंग कॉलेज

भारत के गवर्नर जनरल लॉर्ड कार्ल्स कैनिंग की मौत के बाद प्रजा के ताल्लुकेदारों ने उनके सम्मान में स्मृतस्वरूप कॉलेज की इकाई जताई। एक मई 1864 को हुसैनबाद में कैनिंग कॉलेज की स्थापना हुई। जो लखनऊ विश्वविद्यालय बना। जिसका एक बड़ा हाल बाबूए गंज विद्यार्थी की किताब अनुमान-ए-बिंद में है। (ताल्लुकेदारों ने 27 फरवरी 1864 को बैठक में प्रस्ताव पास किया कि सभी ताल्लुकेदार मालगुजारी का एक फीसदी हिस्सा शिक्षा संस्कार को दें। प्रजा फीसदी कैनिंग कॉलेज और प्रजा फीसदी उस संस्कार के लिए जिसमें ताल्लुकेदारों के बच्चे पढ़ेंगे।

अवध के छात्रों की फीस तीन, अन्य की पांच रुपये

एलयू की स्थापना कैनिंग कॉलेज के रूप में हुई थी। कॉलेज के संचालन का खर्च मालगुजारी से वसूले गये राशि से निकाला जाता था। कैनिंग कॉलेज कमेटी ने अवध के छात्रों की फीस की महिना फीस तीन रुपये और अन्य के लिए पांच रुपये मासिक निर्धारित की। हालांकि यह छूट गरीब और प्रतिभा की फीस में नहीं था। परिक्षा के लिए सभी विद्यार्थियों से तीन रुपये मासिक फीस थी। कैनिंग कॉलेज में स्कॉलरशिप का भी प्रावधान था। हालांकि स्कॉलरशिप केवल अवध के विद्यार्थियों को ही दी जाती थी।

ये होंगे सम्मानित

1. अखिलेश लखनी सिंह 2. डी. गिरिधर गोपाल सनवाल 3. प्रबोध सेठ 4. न्यायमूर्ति अनिल रस्तोगी 5. पत्रकार अखिलेश कुमार सिंह 6. प्रभुनारायण श्रीवास्तव 7. साहित्यकार प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित 8. न्यायाधीश मनीष कुमार

सात शिक्षकों को बनाया कोआर्डिनेटर

लखनऊ विश्वविद्यालय के इंजीनियरिंग संकाय के अधिष्ठाता प्रोफेसर एसपी सिंह ने सात असिस्टेंट प्रोफेसरों को संकाय के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट सेल का कोआर्डिनेटर बनाया है. इनमें गौरव श्रीवास्तव, प्रशांत कुमार सिंह, पवन कुमार सिंह, नमिता श्रीवास्तव, सोनम सिंह, मारुति मौर्या और रोली कुशवाहा शामिल हैं.

आनलाइन कोर्सों में नए बैच की पढ़ाई शुरू

एलयू के सेंटर फार आनलाइन एंड डिस्टेंस एजुकेशन के अंतर्गत नए सेमेस्टरों में आनलाइन पढ़ाई शुरू हो गई है. सेंटर के निदेशक प्रोफेसर पियूष भार्गव ने बताया कि जनवरी 2025 के दूसरे, जुलाई 24 के तीसरे और जनवरी 24 के चौथे सेमेस्टर की कक्षाएं शुरू हो गई है. एमकाम, एमएसडब्ल्यू, एमए पालिटिकल साइंस, इकोनामिक्स और इंग्लिश तीसरे सेमेस्टर की पढ़ाई पांच यूनिट में पूरी हो गई. विस्तृत जानकारी https://luonlineeducation.in/ पर अपलोड की गई है.

छात्रवृत्ति की आवेदन तिथि एक तक बढ़ी

एलयू ने कैंपस में संचालित तीन छात्रवृत्ति योजनाओं में आनलाइन आवेदन की तिथि एक दिसंबर तक बढ़ा दी है. इसके तह